



[illegible]

स्वाहा ॥ ६० निवस्तानिके नक्षत्रं वृद्धीयान् ॥ **बालयजुः ॥ गंगधायनयनम ॥ वं व इकाय न**
म ॥ हं हं उयासाय नमः ॥ यांथागिनी लो नमः ॥ इति विष्णु मंत्रः ॥ ॐ ह्रीं हूं रुद्र स्वाहा ॥
निव्यायक नयः ॥ वा क वि ह म नी न सा ध न ॥ ॐ वृक्ष य य ॥ **पृथ ॥** ॐ वे ज्ञ ग (धः
ॐ ॥ **वृक्ष ॥** ॐ वृक्ष य य ॥ **पृथ ॥** ॐ वृक्ष दी य ॥ दी य ॥ ॐ वृक्ष ने व य ॥ ने व य ॥
ॐ हृदि ॥ श्रीं मृश्व ॥ रु नि त सि ॥ न न ॥ **कृत्वा कर्त्तव्यं ॥** कृत्वा कर्त्तव्यं कृत्वा कर्त्तव्यं
नि त क र ॥ नील व धू ज या य ॥ नू या नू य वे नि य न ॥ कृत्वा कर्त्तव्यं कृत्वा कर्त्तव्यं
माह न ॥ **कृत्वा कर्त्तव्यं कृत्वा कर्त्तव्यं ॥** जय १० ॥ यानि मृदां पद न य न ॥ ॐ सर्व विः
घ्रा नू त्सा न य ॥ ॐ नि वि घ्रा ने त्सा न य न ॥ अर्घ्य दे न सि द्धा र्थ ने ना ना व मृद
या दिय न ॥ ॐ अ य वि ण वृक्ष त म न क र ॥ ॐ रुद्र स्वाहा ॥ **ॐ नि मृदु ध रु नि (धः ॥**
न दू य नि के म सा स न ॥ कृत्वा वि ष्ट न मा स्ती र्थ ने द ला व न क र्त्तव्यं न द ला वः

कृष्णसा न व्याचुचर्मन्वा ॥ ॐ श्रीं ॥ सु न ख वज्र न ख दुं रु ट् स्वाहा ॥ न क च न न पथा यज
ये न ॥ स्वस्ति का स न य मा स न म्वा न्ना प वि न्ध ॥ ॐ न म ॥ पृथ्वी के उ ता जा हा नु य स म्वा क र्म ॥
वर्जये ॥ ॐ पृथ्वी पृथ्वी महा पृथ्वी स पृथ्वी पृथ्वी स र व पृथ्वी च या व की ॥ ॐ रु ट् स्वाहा ॥
॥ ॐ नि पृथ्वी लो ध न ॥ ॐ न ना हि ध क स म य प्रिय स मा स थ दुं रु ट् स्वाहा ॥ ॐ नि पृथ्वी
दि स नु म य न्वा ॥ ॐ श्रीं ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ का य लो ध न ॥ न न ॥ सु व धूर् दि धी ० च क पी ख न्द न
क च न न क य न क मु नि ॥ ग न च न क क म व ज पृथ्वी दि ड व वि वि लि ख्यं ॥ श्रीं श्रीं ॥
सु न ख वज्र न ख दुं रु ट् स्वाहा ॥ ॐ नि म नु ध रि का ध न्द ल व उ न न च उ ध न न
र व ज च क वि वि लि ख्यं ॥ श्रीं श्रीं ॥ सु न ख वज्र न ख दुं रु ट् स्वाहा ॥ ॐ नि म नु ध ॥ पृथ्वी
जी या म्प र्ण ॥ उ ड न रु प न्चि म ट् रि का ध म ॥ ॐ लि ड न ॥ न न ॥ पी ० सु जा ॥ श्रीं श्रीं
न न क थ न म ॥ श्रीं न ना य न म ॥ कृष्ण सा न य न म ॥ व ना हा य न म ॥ पृथ्वी न म

र्थे नमः॥ दिक्कत्र वा सिन्धे नमः॥ बहुनायिकाये नमः॥ ॥ गन ४ पाथयाम कमयत्
व ३ दि विधाया॥ श्री कोरनक वर्धुना ही ध्यात्वा त इ हूताग्निना स्व द हं दग्धं वि विंध्य
॥ श्रीं का नृमीन वर्धुं हृदि वि विंध्य त इ हूत वायुना त इ स्मृतात्सा त्रय त॥ हू का नृ
ध्वन वर्धुं जि त सि ध्यात्वा त इ हूता मनेनाह्वय त॥ ॥ गना ध्यात॥ त ना इय गन
पाप्मानं जगत्सर्वं वना वनं। मन्त्रे व्यायकनी नाक्षोत्रा को नाक्षि नय ह न ४ न च द सुधया
गन त क य म वि विनय ७। त स्थापनि त ना ध्याय हं का ना द क ही ज न॥ त नाप नि न
ना ध्याय हू का नृ नी स स नि हं। त स्थाप नि त ना ध्याय हू हि कां वी ज हू वि तां॥ त स्था
प नि म हू दे वीं स र्व नी स य नृ प त॥ स ध्या द नीं व्या ध्वं व र्म व सु कृ न नि त नि नीं॥
पी वा नृ न प था शी नां त क वर्धु स सा व र्म। स ल जि का म हा ही मां द हू का टि स म
क र्मा॥ पि प्र म प्रे क जे ट रू र्ते नी स ना ग स म क र्मा॥ नी सा प ल स स न्ना सा त्र द श

पर्यंक नी॥ (ध्वना स्त्रिय पटिकाय क कया लय च्छ (म हिता। ल ला ट न क ना (ग ध क म
व धूर्त व न सिनी॥ अ नि उ उ म हा ना ग क न हो ल म हा क ला॥ इ वी द ल म म ना ग क न
य स्त्राय वी ति नी॥ वे उ बु जा न क मां स ख उ म छि न म छि ना। ज ट क ट न उ च ध
(म हिता नी दु धा न या॥ ख उ न द दि (म स्त्रा ड (म हिता वी न ना दि नी। न द ध स्त्रा धी
ज व धूर्त क र्क का ल क ना य ना॥ वा मा ड न क ना ल य दि क ल न म ना ह न। द ध नी नीः
ल य म स्त्र न द ध स्त्रा ल क पा ल क॥ ज ग ना जा य स र्क द ध नी क न द स त्रि र्क। ध मा र्क
न ग स दा ह क ध ल क यू न स न नी॥ स व धूर्त व धूर्त ना (ग न क क (म क ल पा धि का। उ उ
व धूर्त म हा द व न व द दि म ना स नी॥ नि र्ग मु धा दिया ग न ल क च ल य प दां व ला।
न व पा द द्यां यू ट वा म पा दा म हा स र्खी॥ क न्या ह ना ग स (म हि क टि स र्ग निः
ला च नी। णी ध द के न ना (ग ध क न नू न य र्वा॥ स य च्छि न ड क न म (छि न क
का

हमलेषा न्यान्यकेन गवितेऽपादयन् यत्तु चित्तेऽपवागहिर्महामासा ॥ अहिना
उव न स्वती ॥ अक्षयनागसं वद्ध ऊटा रुटी वनप्रदा । एवं हतामहदेवीमासा
न नमय तथा ॥ विष्णुपथमहादेवपुत्रिणो हं महाकवि ॥ **निष्ठा ॥ हृदया**
उमान्ती उयवास ह ॥ ॥ **नता हल मरुत पाधम मय कयानि ॥ अथ अथा**
दिन्यास ॥ अस्वामी मदेक ऊटा मनुस्य अक्षय अवि वृहती कुन्द ॥ श्रीमदेक ऊटा
देवता कुं वीजं रुट्ग किं जी किं स र्क म म ऊत कवित्वपादित्य सिद्धर्थ विनियोग
॥ **ग ॥** **रुट्ग ना जलिवध ॥ अक्षय अषय नम ॥ निनसि ॥ वृहती कुन्द स नम ॥ नम**
॥ श्रीमदेक ऊटा येन म ॥ हृदि ॥ कुं वीजा येन म ॥ लि ॥ रुट्ग कय नम ॥ अक्षय ॥
जी किं ल काय हृदि ॥ म म ऊत कवित्वपादित्य सिद्धर्थ विनियोग ॥ व्यापक ॥ साहका
यास ॥ अस्वामी साहका न्यासस्य वक्ता अषय नम ॥ निनसि ॥ गयती कुन्द स नम ॥

॥ मातृकासुतसु निदवताये नमः ॥ इति ॥ वाञ्छनवीजस्थानमः ॥ उक्त्वा ॥ सुतमकि
स्थानमः ॥ इति ॥ ॥ श्रीं कं खं गं घं ङं श्रीं हं दयाय नमः ॥ ॐ चं ङं जं ञं हं श्रीं नि
तसुखाहा ॥ उं टं थं डं ढं णं निखाये वसु ॥ एं तं थं दं धं नं जं कवचाय हुं ॥
उं यं रुं वं लं मं उं नं उं ययाय वोषट् ॥ श्रीं यं १० श्रीं ४ श्रीं माय रुट् ॥ ॥ श्रीं ध्यायेत् ॥
यं वा भर्तृपितृविलोकमुखदा ४ यमध्वेद ४ रुसां लोखसाति निवेद च न्युग कसा
मापीन उम रुनी ॥ मृदा न दग्धं सुधाध्व कनस विद्या च ह सुविज विराध विग
दय सांति नयेना ॥ देवनामा ध्यायेत् ॥ ॥ श्रीं नमो ह्येका ॥ श्रीं १५ नमः ॥ कं १० यमः ॥
कं १२ नमः ॥ इति ॥ ॥ उं १० नमः ॥ नारियमः ॥ वं ५ नमः ॥ तिगयमः ॥ वं ४ नमः ॥ वं ४ नमः ॥
॥ श्रीं ध्यायेत् ॥ हं दं नमः ॥ एं मः ॥ ॥ श्रीं ध्यायेत् ॥ मित्रसि ॥ श्रीं नमः ॥ मय
श्रीं नमः ॥ दं नमः ॥ वं नमः ॥ वं नमः ॥ दं नमः ॥ वं नमः ॥ वं नमः ॥

म॥ द॥ न॥ सा॥ या॥ म॥ न॥ म॥ वा॥ म॥ ना॥ सा॥ या॥ न॥ म॥ द॥ द॥ ग॥ ए॥ न॥ म॥ वा॥ म॥ न॥ द॥ न॥ म॥
॥ अ॥ ष॥ व॥ न॥ म॥ अ॥ ध॥ प्र॥ ज॥ न॥ म॥ उ॥ इ॥ दे॥ न॥ य॥ को॥ उ॥ न॥ म॥ अ॥ ध॥ द॥ न॥ य॥ को॥ उ॥ न॥ म॥
नि॥ न॥ सि॥ न॥ न॥ म॥ म॥ र॥ न॥ न॥ म॥ द॥ द॥ उ॥ ज॥ न॥ म॥ स॥ ध॥ स॥ ख॥ र्व॥ न॥ म॥ म॥ नि॥
व॥ न॥ ग॥ न॥ म॥ अ॥ उ॥ ति॥ म॥ न॥ च॥ न॥ म॥ अ॥ न॥ या॥ ए॥ न॥ म॥ ए॥ व॥ वा॥ म॥ यि॥ व॥ क॥ उ॥
म॥ अ॥ न॥ म॥ द॥ दि॥ न॥ म॥ ल॥ ट॥ न॥ म॥ जा॥ न॥ नि॥ न॥ म॥ अ॥ न॥ म॥ अ॥ न॥ म॥ अ॥ न॥ म॥
लि॥ म॥ ल॥ ट॥ न॥ म॥ अ॥ न॥ म॥ ए॥ व॥ वा॥ म॥ या॥ द॥ यि॥ त॥ थ॥ द॥ न॥ न॥ म॥ द॥ द॥
या॥ न॥ म॥ वा॥ म॥ या॥ न॥ म॥ अ॥ न॥ म॥ अ॥ न॥ म॥ ना॥ न॥ ल॥ न॥ म॥ उ॥ द॥ न॥ म॥ न॥ म॥
ह॥ दि॥ य॥ न॥ म॥ द॥ द॥ न॥ म॥ क॥ क॥ दि॥ ल॥ न॥ म॥ वा॥ म॥ न॥ म॥ द॥ द॥ दि॥ द॥ द॥ वा॥
हो॥ न॥ म॥ ह॥ द॥ दि॥ ज॥ न॥ म॥ ह॥ द॥ दि॥ म॥ न॥ म॥ न॥ न॥ म॥ न॥ न॥ म॥ न॥ न॥ म॥ न॥ न॥ म॥
न॥ न॥ नि॥ मा॥ ए॥ का॥ न॥ म॥ ॥ म॥ न॥ न॥ म॥ न॥ न॥ म॥ न॥ न॥ म॥ न॥ न॥ म॥ न॥ न॥ म॥

[illegible]

कथं ॥ एकजलये विमलपकट उकुये धीमहि तन्नता नयवा दया ॥ असा न
॥ ॥ कुरु कुरु ॥ नमो नमो कि कमला सनाय नमः ॥ व्यापक मधुसाय नमः ॥ जी जी नमः
गी गूं नमः ॥ ॥ १४ ॥ मुं उके अयं विभावय र नमः अवय र स्वाहा ॥ जी जी वा वी वू वं वो
वः वा वः अयं विभावय र नमः अवय र स्वाहा ॥ जी जी कां की कुं के को के ४ कु
क वः अयं विभावय र नमः अवय र स्वाहा ॥ नमः मुं रु स ४ नमः र नमः नो ह वः
नमः नमः वः धी नमः अवय र स्वाहा ॥ मरु मरु ॥ मरु मरु नमः ॥ अवाहनादि ॥ धन
मः ॥ यानि मः ॥ ॥ विमलार्थ कथन ॥ जी का नमः रिको धा वः वः नमः विलिख
॥ मरु ॥ व्यापक मधुसाय नमः ॥ रुद्र म विपक्षाल चित्ता मधुसाय नमः ॥ जी जी नमः
नी नमः ॥ धर्मपद दग कलात्मनः नमः मधुसाय नमः ॥ रुद्र पौ नमः काल चि
त्ता मधुसाय नमः ॥ जी जी हां ही कुं मुं वः सः सः ददग कलात्मनः सूर्य मधुसाय वा

गायनमः॥ मूलमः॥ विष्णुमः॥ ममात्मकाया॥ ॐ वक्राद्युखधुसं हतं मसखनसमः
निर्गमः॥ मयनिर्गमहायार्णपीयूषं न स मावहः॥ वउ॥ स॥ कान॥ मूलननिनीदुर्ध॥
रुद्रपादुर्ध॥ एवंगाउनी॥ ॐ नैवउधुनी॥ रुद्रनका॥ गालनय॥ दिग्धधनी॥ १०॥ जीः
जोसोसोहंमो कामपदुर्धउकेलात्मनसाममधुलायपागामतायनम॥ दक्षिणउजना
काय॥ ॐ ह॥ ४॥ ह॥ ४॥ जी॥ ४॥ ख॥ ४॥ ख॥ स्वाहा॥ वामउजकाय॥ जीकात्रेयपद्मलजनीमाकात्रे
यमासकीकृष्णद्विउजावजहसी॥ ॐ कात्रेयपद्मलकृष्णद्विउजवजहसीतथा॥ यमः
मृतनमहात्रिजिदविउय॥ कात्रेयपद्मलकृष्णद्विउजवजहसीतथा॥ यमः
रसोधनिउक्तवजिजिका॥ ॐ नैवउधुनी॥ रुद्रनका॥ गालनय॥ दिग्धधनी॥ १०॥ जीः
हंकात्रेयपद्मलकृष्णद्विउजवजहसीतथा॥ यमः
मयकुं॥ मूलनदगधुजयन॥ मूलनरियाजलि॥ मउ॥ गनेदुजयन॥ यानिमर्श॥

मूर्धादकेन प्रजापत्यादि सर्वं प्राकर्म ॥ ॥ नमो हस्तवलि ॥ ॐ समस्तु यी (अपपीरनग
नायनगनघात्रापकात्रवलात्रयवलात्रममनायममनवातिनीत्यसर्वहनत्यं
न वलिं गृह्ण २ कृ हृद स्वाहा ॥ हृद वदके गृह्ण यागिनी वलि ॥ ॐ हौं हृद यो स य वलि
गृह्ण २ कृ हृद स्वाहा ॥ ॐ वां वदक नाथ य वलि गृह्ण २ कृ हृद स्वाहा ॥ ॐ गं गधय नय
वलिं गृह्ण २ कृ हृद स्वाहा ॥ ॐ यां यागिनी या वलिं गृह्ण २ कृ हृद स्वाहा ॥ ॐ मं गधय नय
॥ नमो हस्तवलि मेहा कालाय मम न वलि न स्वदा म उम न हस्तय कह २ कृ हृद स्वा
हा ॥ ॐ मेहा काल सा निषो न वलि गृह्ण २ गृह्णाय २ मम सिद्धि यय क स्वाहा ॥ ॐ मि सा
माय पाय ॥ ॥ उरपाय धस्वनि न सिद्धि नय ॥ ॐ उर्द्व के म न न नाथ पाद को य
यामि नय यामि ॥ ॐ म के म न न नाथ पा य न ॥ नील क ध नाथ पा य न ॥ रुच ध नाथ
न न नाथ पा य न ॥ ॐ मि दि शो य ॥ वलि क नाथ पा ॥ कूर्म नाथ पा ॥ मीन नाथ पा ॥ महेश्व

न नाथपा॥ ह नि नाथपा॥ ॐ नि सिद्धोद्य॥ ना नायत्य म्नापा॥ लान् मत्य म्नापा॥ जया म्नापा॥ वि
द्या म्नापा॥ मुहा दर्थ म्नापा॥ सुखान न्दा म्नापा॥ ~~पनमान~~ पनमान न्दा म्नापा॥ पानिजाता म्नापा॥
कृत ध्वर्य म्नापा॥ विदूपा द्वा म्नापा॥ हे न म्नापा पूत॥ ॐ नि मानोद्य॥ स्वयं नृ नृ म्नापा नन्द
नाथपाइकां दूजया मि त्थयामि॥ ॥ ~~शान वरुजा~~ ॥ ~~य विमद बुधिरिये~~ ॥ ~~उत्तर न~~
~~महा न~~ ॥ ~~जो~~ ~~जो~~ ~~भू~~ ~~भू~~ ~~नृ~~ ~~ख~~ ~~धु~~ ~~म~~ ~~धु~~ ~~ला~~ ~~का~~ ~~ल~~ ~~त्या~~ ~~दि~~ ॥ यद्वा स नाय पाइकां ॥ मृधयो
ग स नाय पाइकां ॥ ~~न~~ ~~क~~ ~~र्मा~~ ~~स~~ ~~ना~~ ~~य~~ ~~पा~~ ~~इ~~ ~~कां~~ ॥ ~~न~~ ~~ज~~ ~~कि~~ ~~मि~~ ~~र~~ ~~वि~~ ~~व~~ ~~का~~ ~~क~~ ~~ध~~ ~~म~~ ~~य~~ ~~ज~~ ~~४~~ ~~नृ~~ ~~मु~~ ~~ताः~~
य रुद्र॥ ~~हुं~~ ~~रु~~ ~~द्र~~ ~~व~~ ~~ज~~ ~~प~~ ~~ज~~ ~~र~~ ~~स्वा~~ ~~हा~~ ॥ च ल म क ले क ल म च ल ~~जो~~ ~~हुं~~ ~~रु~~ ~~द्र~~ ~~स्वा~~ ~~हा~~ ॥
~~नाम~~ ॥ ~~न~~ ~~ज~~ ~~कि~~ ~~मि~~ ~~र~~ ~~वि~~ ~~व~~ ~~का~~ ~~क~~ ~~ध~~ ~~म~~ ~~य~~ ~~ज~~ ~~४~~ ~~नृ~~ ~~मु~~ ~~ताः~~ ~~रु~~ ~~द्र~~ ॥ क ल सो ध न ॥ ~~न~~ ~~ज~~ ~~न~~ ~~मो~~ ~~ह~~ ~~ग~~ ~~व~~ ~~नि~~ ~~ः~~
रु क म सा यं पी मृ र्मु षा त्या न म ॥ ~~न~~ ~~हुं~~ ~~क~~ ~~डि~~ ~~का~~ ~~य~~ ~~क~~ ~~न~~ ~~दी~~ ~~पा~~ ~~थे~~ ~~जो~~ ~~पी~~ ~~न~~ ~~ज~~ ~~नी~~ ~~त्यो~~ ~~न~~ ~~म~~ ॥
~~न~~ ~~ज~~ ~~जो~~ ~~जो~~ ~~हुं~~ ~~व~~ ~~च~~ ~~न~~ ~~नि~~ ~~खे~~ ~~हुं~~ ~~पी~~ ~~म~~ ~~ध~~ ~~मा~~ ~~त्या~~ ~~न~~ ~~म~~ ॥ ~~न~~ ~~ज~~ ~~घा~~ ~~न~~ ~~नृ~~ ~~धा~~ ~~न~~ ~~नृ~~ ~~धा~~ ~~ना~~ ~~मृ~~ ~~खि~~ ~~व~~ ~~रु~~

तूपाये जे श्री नाना मि कार्या नमः ॥ जे श्री महाना निकाये जे श्री कनिष्ठा कार्या नमः ॥ जे किं
२ विचै काळ धूये जे श्री नाना य रुद्र ॥ **॥ नि क न चा स ॥** जे नाना ए ग व नि द्र ले म ला ये श्री उर्द
व काय नमः पाद कां ॥ जे श्री कृत्तिका ये कल दी पाये श्री द्रव कोय पाद कां ॥ जे श्री ज्येष्ठा
द्वे व च न निख श्री दक्षि ण व काय नमः ॥ जे श्री धा न न्र धा न न्र धा न म्र खि व द्र तू पा ये श्री उ ल
न व काय नमः ॥ जे श्री महाना निकाये श्री प चि म व काये नमः ॥ जे किं २ विचै काळ
धूये श्री प ना प न व काय नमः ॥ ॥ जे नाना ए ग व नि द्र ले म ला ये जे द्र द या य नमः ॥
जे श्री कृत्तिका ये कल दी पाये श्री नि न स स्वा हा ॥ जे श्री ज्येष्ठा द्वे व च न निख श्री निखा
ये श्री ष ट् ॥ जे श्री धा न न्र धा न न्र धा ना म्र खि व द्र तू पा ये जे क व च ये य द्र ॥ जे श्री महाना
ह नाना निकाये श्री न न्र ग य वो ष ट् ॥ जे किं २ विचै काळ धूये जे श्री नाना य रुद्र ॥ **॥ नि क**
॥ न चा स ॥ ॥ जल पाण द्र ज ॥ जल पाण स ना य पाद कां ॥ जे श्री श्री न न्र नो कि ले न वा

नन्दवीनाधियतथ मू जलपागल दानिकाये पाइकां॥ जाँ ददययादि॥ प्रउम दूजा॥
रावाहनादि॥ धन मदीदर्थयत॥ जिंज कृत्तिकाय विमह कूलदिपाये धीमहि न
न कृत्तियवादयान्॥ भोमादिसर्वद्वयपाइयत॥ ॥ दयसंस्तव॥ ॥ मूर्धपागल
जा॥ मूर्धपागल सनाये पाइकां॥ जिंज जाँ जाँ फूँ जेप मूत्र रधान रगत नन रत्रय चटर
यचटर कह रवे मूरधानेय रविघानय रविघिर रूँ ३ रुद्रकाथी महाकामा निकावि
चपाइकां॥ जिंज मू राव नन्द शक्ति ह नवान नदी महाविद्याना ऊध्वनी जाँ श्री मूर्ध
पागल दानिकाये पाइकां॥ प्रउम दूजा॥ रावाहनादि॥ यानिमूर्ध मी दगवग
॥ ॥ हन उदिक मू यमदीया॥ जिंज जाँ जी मूँ मूँ मूँ जाँ जाँ जे॥ जिंज मूँ मूँ
मन रं चन्दन नम॥ जाँ गितल मूरदन नम॥ जाँ विनल सनम॥ मूँ सर्वजनमा मूँ ह
नीनम॥ मूँ नानाक गलका नय मूँ पाइकां॥ कसा पाइकां॥ विन्दु ३॥ ॥ नालिनी

यथा ॥ ॥ यं ववसि विय ॥ मयूना सनाय पादुकां ॥ जं जं श्रीं की कल पशु वद कनाथः
यया दूकां ॥ धनं वलि ॥ न त्रिं ज्ञा यया दूकां ॥ वे दं दगया साय पादुकां ॥ धनं वलि ॥
नं सि द्या सनाय पादुकां ॥ जं जं यां या नि नीत्या पादुकां ॥ जं जं ये क विया गिनी नी पी रजा
दगजा स रुजा या गजा ग हजा कलजा स दा रुजा ये क विया गिनी नी ख वनी रुवनी
मवनी एका दनी द्य दनी वे उ ४ य ऊ ४ य ट स फा ख न वा दनी नी रि जं म स नी नी य
प प पं चानी वलिं ग रु म म सि दि क व नु दे रु द स्वाहा ॥ य ता स नां य पादुकां ॥ जं जं
मृ श्री सि दि वा मृ धु अ ये पादुकां ॥ धनं वलि ॥ मृ घा स नां य पादुकां ॥ जं जं मं गौ गौ गौ गौ
गं उं ४ मं कल ग म म नाय पादुकां ॥ धनं वलि ॥ द ध न उ नी या नि वि नु ग ज म उ द म
यं ग जय ॥ श्रीं की स्वाहा ॥ दां स्वाहा ॥ यां स्वाहा ॥ मूं स्वाहा १० ॥ गूं स्वाहा १० ॥ मूं स्वाहा १० ॥ जं या य
ग ॥ मृ गं मृ कादि ॥ न यं य ॥ न म ४ श्री नाथ य न उ म ॥ श्री सि दि नाथ य ॥ न म ४ श्री कृ जं य ॥

नाथाय नमो नमः ॥ **तत्त्वसाधनं** ॥ **॥ श्रीसर्वार्थनारायणवाहन ॥** विदव पूजा ॥ न
नासनाय पादुका ॥ मयूनासनाय पादुका ॥ मूषासनाय पादुका ॥ विहङ्गपासाय पा
दुका ॥ धनं वलि ॥ नमो श्रीकृतपूजवत्कनाथाय पादुका ॥ धनं वलि ॥ नमो जगन्मोगू
४ (ग) (ग) ४ (ग) कृतपूजा ॥ धनं वलि ॥ **नारायणवाहन ॥** तर्जनी इधुम
जमडा ॥ **॥ दिग्वरुण ॥** **॥ कलमरुज ॥** अथानमकयनम ॥ अनन्तासनाय
नमः ॥ कदासनाय नमः ॥ ननासनाय नमः ॥ पञ्चासनाय नमः ॥ कणासनाय नमः ॥ कलि
कासनाय पादुका ॥ पद्मासनाय पादुका ॥ **॥ ध्यानं ॥** उद्गृह्णति कर्णकौर्मणिनेन व
नुमोसितं । वनदारयहस्तं मूजमोलाधनहर्तु ॥ नर्वध्वात्मा मसादवमिष्टकामार्थसि
द्धयत ॥ **॥ अथानम ॥** नमो जगन्मोधात्रे जांथधात्रे जीधात्रे धात्रे हस्तं हस्तं सर्वतः सर्वसर्वं
रुसर्वं तूदतूपाजपादुका ॥ **॥ वरुण ॥** जगन्वरुणकृतिनि मुनेन साकाकषधिजाकामा

महावधि कुं मी महाकाह कानिर्धनं सो स० श्रीपाद कां । ~~सुखमनु~~ विजं म्मां कुरुवद
महासन सभाहन सकल नीर्थ मनुदवता कला तत्त्व तत्वा विषय तथैव ॥ न विष्णुः
रुद्रासन विद्या जिव तत्वा य म्मां म्मां श्री संधूकल म्मां सूर्य पाद कां ॥ ॥ वदन्ते
नमः॥ विष्णुवनमः॥ रुद्राय नमः॥ ॥ सदाजिवाय नमः॥ ॐ रुद्र स० सती मय सूर्यः
जयाय नमः॥ कालादिसक सम ॥ ॐ देव्या नमः॥ ॐ नृदि दग लोकपाले नमः॥ ॐ
दित्यादिन व ॥ हृद्या नमः॥ अग्नि न्नीदि न्नी विष्णु निन द ॥ ॐ न्नी नमः॥ विष्णु कालादिसक
विष्णु नित्या ॥ न्नी नमः॥ पण्डित दायि पण्डित नित्या नमः॥ मवादि द्वादश ना नित्या नमः॥
मूर्द्धन्या नमः॥ कन ॥ न्नी नमः॥ गंगादि न्नी स नित्या नमः॥ अथ कालादि न्नी विष्णु जीवी
नमः॥ वनिष्ठादिसक पण्डित्या नमः॥ अनेनादि न्नी कलना गवा ॥ न्नी नमः॥ मन्त्र ना
नकलाय नमः॥ मन्त्रिकलाय नमः॥ विर्यकलाय नमः॥ निवृत्तिकलाय नमः॥ पण्डितक

कै माहेश्वरी नृनहे नवायपाइकां॥ वें कामानि च धुहे नवायपाइकां॥ टं वे ध्रुवीकाधहे नवा
यपाइकां॥ तें वा नाही उल्लहे नवायपाइकां॥ पं०० न्नाधी कयाली गहे नवायपाइकां॥
यं चामधुली घलहे नवायपाइकां॥ गं महलकी संहो नहे नवायपाइकां॥ अद्यानामु॥
प्रउठ रुजा॥ अद्यानामुधवलि॥ शवाहनादि॥ यानि मूडां॥ मूं मूं १०॥ का०॥ वधूनामि
॥ अगमनादि॥ तथेध॥ ॥ पाउरुजा॥ अद्यानामुकायादिली ह्री०॥ नव क्रिम धुलाय
नम॥ हं सूर्यमधुलायनम॥ संधाममधुलायनम॥ अद्यानामुध॥ हूं हूं हूं हूं हूं पाः
इकां॥ ज० मूं अनान्दमकिहे नवानन्दवीनाधियनय मूं महा पागले दानिकायेया
इकां॥ ज० मूं अनान्दमकिहे नवानन्दगीविद्यानाइ॥ ज० मूं जीमहापाग
ले दानिकायेया यपाइकां॥ ३॥ अद्यानामुध॥ अद्यानामुध॥ अद्यानामुध॥ अद्यानामुध॥
अद्यानामुध॥ वलि॥ शवाहनादि॥ अद्यानामुध॥ यानि मूडां॥ मूं मूं १०॥ का०॥
जाय॥ ह्री०

कायवियालिदूर्ध्वतत्तमत्तदिव्यरविनी। त्रिद्वि सिद्धिकरीदवीपाण्डुरजार्चनियदं॥ अ
नन्द॥ दि॥ नर्यद॥ ॥ **ॐ त्रिद्विद्विद्वि** ॥ यन्मासनायपाइकी॥ ॥ **ॐ** शानन्दमकीहेनवा
नन्दवीनाधियतथ **मृगीपी त्रिद्विद्विद्वि** दानिकायेपाइकी॥ **धन** **ॐ** वलि॥ **श्रावाहनादि॥**
धनमृगी ॥ ॥ ॥ **ॐ** नवासायजा॥ यन्मासनायपाइकी॥ ॥ **ॐ** वासनायपाइकी॥
वियाजसिन्धु **ॐ** शानन्दमकीहेनवानन्दविनाधियतथ **मृगीपी** नवासायजा
धुतलद्वानि **ॐ** कायेपाइकी॥ **ॐ** मृगीशानन्दमकीहेनवाः **ॐ** नन्दपीवियाज
ध्वनी **ॐ** पीन **ॐ** वासायजायमधुलर **ॐ** दानिकायेपाइकी॥ ॥ **ॐ** धनवलि॥ **ॐ** व
रजा॥ **ॐ** श्रावाहनादि॥ **ॐ** निमज्जी॥ ॥ **ॐ** उत्रयकिद्विजा॥ यन्मासनायपाइकी॥ **ॐ** मृगी
पीउत्रय **ॐ** वकिर दानिकायेपाइकी॥ वलि॥ श्रावाहनादि॥ **ॐ** धनमृगीदमयग॥ ॥ **ॐ**
माहनीहय॥ यन्मासनायपाइकी॥ **ॐ** मृगीपीउत्रयकीकसलेदानिकायेपाइकी॥

वति ॥ अवाहनादि ॥ धादिमूला ॥ ७ ॥ वषासनायपाइका ॥ सिहासनायपाइका ॥ अमा
शनेन्दमकिह नवानन्दवीनाधीयनयम्या ॥ प्रीकठेनधमनकिहसहिनायपाइका ॥
वति ॥ ॥ हसानायपाइका ॥ वषासनाः ॥ यपाइका ॥ मयूनासनायपाइका ॥ गत्र
जसनायपाइका ॥ महिषासनायपाइका ॥ गजासनायपाइका ॥ यनासनायपाइ
का ॥ जनासनायपाइका ॥ ॥ अर्धान्नममाधवनन्दविमलजीवकायणीविज्ञपाइका ॥
वति ॥ अर्धान्नममाधवनन्दविमलजीवकायणीविज्ञपाइका ॥ वति ॥ अर्धान्नममाधः
वनन्दविमलजीवकायणीविज्ञपाइका ॥ वति ॥ अर्धान्नममाधवनन्दविमलजीवकायणीविज्ञ
वीविज्ञपाइका ॥ वति ॥ अर्धान्नममाधवनन्दविमलजीवकायणीविज्ञपाइका ॥ वति ॥ अ
र्धान्नममाधवनन्दविमलजीवकायणीविज्ञपाइका ॥ वति ॥ अर्धान्नममाधवनन्दविमलजीवकायणीविज्ञ
मलजीवकायणीविज्ञपाइका ॥ वति ॥ अर्धान्नममाधवनन्दविमलजीवकायणीविज्ञपाइका ॥ वति ॥ अ
र्धान्नममाधवनन्दविमलजीवकायणीविज्ञपाइका ॥ वति ॥ अर्धान्नममाधवनन्दविमलजीवकायणीविज्ञ

[illegible]

पाइकी॥**वलि**॥ जं जह गव गिरिज मूं मूं मूं कृत्तिका मूं मूं मूं ख गे जं धान नू धान नू
धानो मू खि मूं मूं कि गिर वि च पाइ की॥**वलि**॥ ॥ जं जय क वि धा गि नी नी पी १ जाः
सह जा या ग जा ग रु जा केल जा स हा हा जो थ क वि धा गि नी नी ख च नी ल च नी (ग
च नी च क द नी डा द नी गु द नी व उ ४ य सु ष ट स का ष न वा द नी धं गि ज ग म सः
नी ना पि (थ य प व ना व रि ग रु र म म सि डि क च नु रु ३ रु द स्वा हा॥ ॥ **गिया ऊति**
॥ जं मूं नान न न कि ले न वान न न बी ना वि य न य मूं नी नू हा विं ग ति क र्म ल दानिका
य प मूं इ की॥ **वलि**॥ ॥ जं ज मूं नान न न किः मूं ले न वान न न नी मा हा वि धा ना ऊ
न व नी मूं मूं नी नू हा विं ग ति मूं क र्म ल दानिका थ य पाइ की मूं ज या मि ३॥ **वलि**॥
व नि गी मूं मूं जा मूं **मवाहन** थ दि॥ **धन धानि मूं ज द न य न॥ न व र्ध न॥** ॥ य ना स
नाय पा थ इ की॥ जं मूं नी नू द ख धु मा ट ख धु म न ख धु गि ख धु अ ल दानिका

ये पाइ को॥ वलि॥ नारायण नादि॥ लिख छाम्पू॥ ॥ नारायण भक्त्यादि॥ चन्द्रमधु
लाघिय नयन वक्षुता सनाय पाइ को॥ ऊँ हार्य मधुलाघिय नयन विप्रुता सनाय
पाइ को॥ जो वक्रि मधुलाघिय नयन रूडय ना सनाय पाइ को॥ ऊँ चन्द्र मधुलाघिय
नयन शीश्व नयन सनाय पाइ को॥ ऊँ नकि मधुलाघिय नयन सदा निवय ना सना
य पाइ को॥ वृषा सनाय पाइ को॥ सिंह सनाय पाइ को॥ ॥ ध्यान॥ वृषह सं
स्तिर्देव स्ववर्धन वसाहिर्न। एकवकुंति नगवै उजाष्टदगध निधी। उमत्र
य नुं वाने स्वम मर्क म वड के। मख सुवीन वा य के वनदा वनददि। धाम स्व
लोर्क मूल के वने रुस क पा म के। धेधु क पा ल वध के मूठया लय ना सन॥ पदे
न वदिन जान वा मीन स्म चंद वनी। एकवकुंति नगव नूठ वध वधिना॥
दि उजा वनदा दद सिंह स्म लय सव्य सा। नाना हन ध सल य स रू ध के न द ध॥

[illegible]

याम ॥ अथ मन्त्रादि न्यास ॥ अथ श्रीमदं कज्जलमनुस्य अक्षयमभिर्हृत् हनीवृन्द ४८
 श्रीमं कज्जलदेवता कुं वीजं रुद्रं भक्तिं जी किलकं मम देवते कवित्वपात्रि स्य सिद्धिर्ध
 विनिर्वाण ॥ ॐ निरुक्तं जनिवन्ध्या ॥ अक्षयं सुखं यत्नमः ॥ निरुक्तं ॥ वृहनीवृन्द सन
 मः ॥ अथ ॥ श्रीमदं कज्जलदेवते नमः ॥ इति ॥ कुं वीजाय नमः ॥ सि ॥ रुद्रं भक्तिं यत्नमः
 ॥ अथ ॥ जी किलकाय नमः ॥ इति ॥ मम देवते कवित्वपात्रि स्य सिद्धिर्ध विनिर्वाण ४
 ॥ यापकं ॥ ॥ अथ मन्त्रादि न्यास ॥ ४८ सर्व वायुपि ॥ अथ सुभाय रुद्र ४॥ कलसो धनं ॥ जाः
 अखिल वायुपि ॥ अथ सुभाय रुद्र ४॥ कलसो धनं ॥ जाः
 पि ॥ अथ मन्त्रादि न्यास ॥ ४८ सर्व वायुपि ॥ अथ सुभाय रुद्र ४॥ कलसो धनं ॥ जाः
 निष्ठाकात्यायनमः ॥ ४८ सर्व वायुपि ॥ अथ सुभाय रुद्र ४॥ कलसो धनं ॥ जाः
 पृष्ठादिमि लितदिनकन कि नधम नूध के सु मांज जो माह का ध्यात्वा हृदया नमः

[illegible]

वर्धवतं सिनी ॥ अग्निः उग्रमहाभागकनहासमहाकला ॥ इवांदलम्भामनागकनस्य
 द्वापवीगिनी ॥ चउजुजात्रकमीसखधुसधितमृष्टिना ॥ जणकटनउजुल ॥ अति
 गुमिद्रुधाय्या ॥ खहनददि ॥ ६ ॥ ह्याद्ध ॥ अतिनावीननादिनी ॥ नदधस्त्रादीजवेधुंक
 कालकनापनी ॥ वासाधनकनालेषधिकस्रनमनाहन ॥ दधतीनीसपधुं
 नदधस्त्राकपासक ॥ उगतांजायसयकदधतीकन्दसन्नितं ॥ धुमाहनागसदा
 हकधलेषनस्रदनी ॥ स्रवधुवधुनागधककधकसपाधिक ॥ उग्रवधुमहाद
 वभवद्विमनासनी ॥ निष्कृष्टलियातनकसकवपुषदावरी ॥ गवपादेद्वयो
 नृठवामपादांमहासूखी ॥ कन्दारनागसं ॥ अति कटिसूगालिलावनी ॥ वी
 दकननागधकननूपस्रवा ॥ सद्यच्चिन्नगलडकनमलेषनकलेष ॥ अत्र
 न्यकेमगधिनेषपादपेषपलसचिनेष ॥ पंचागहिमहामाला ॥ अतिनीहवनध्वनी ॥

पल निनामध्व सस्य द्वीपचमाल नः ३७ ॥ नदीत्य नाग सर्ववद्ध जटा रूपा वनप्रदी ॥
 वं लतामहादवी मात्मानं तन्मयमथा ॥ विष्णुपथमहादवपथिता हं महाकवि ॥
 तिष्ठानं ॥ ॥ स्वागतं कर्म नः प्रभु ॥ देवनिह किं स्रनहं पतिवानमन्त्रिण ॥ यचत्वावृज
 यिष्यामि तावत्स्वैरुह्मिनां वधं न्यास न पूष्यमकंदयात ॥ श्रीमदजट ०० हावह ॥
 यजति ॥ ०० हं निष्ठु ॥ ०० त्या (वा) मूर्ख ॥ ०० हं स नि (ध) हिरे ॥ ०० त्यगुष्ठ मूर्खो त्या ॥ ०० हं से
 निरुध्वस्वरो ॥ ॥ वागुष्ठगेहिनी मूर्खित्या ॥ चउ ४ सत्काने ॥ मृ सधनि विदध ॥ नृमुधया
 दध ॥ नेन वा ० ॥ कवचनाथ नृवगुष्ठनं ॥ धन मृजया नृमनी कृत्य ॥ पाधपुनिष्ठा ॥
 शं जी कां यं नं लं वं नं वं लं हं लं दं हा हं ह स ४ श्रीमदके जटया ४ पाध ०० ह श्रीम
 दकजपयाजी व ०० ह स्मि न ४ श्रीमदेके जटया ४ सात्वतमना वदितु हं कान स
 वदितुयाधीवाद्यनानेय न (ध) ग त्यक व दू जि का धाध पाधपाध ०० हे वागत्ये

स्व विनंतिष्ठतु साहा ॥ मूलं धीमदं कज्जटं चेतन्याय नमः ॥ दद्यादहं प्रजम्भया स
कथं ॥ मूलं धीमदं कज्जटं चेतन्याय नमः ॥ मूलं धीमदं कज्जटं चेतन्याय नमः ॥ दद्यादहं प्रजम्भया स
हा ॥ मूलं धीमदं कज्जटं चेतन्याय नमः ॥ मूलं धीमदं कज्जटं चेतन्याय नमः ॥ दद्यादहं प्रजम्भया स
कज्जटं चेतन्याय नमः ॥ मूलं धीमदं कज्जटं चेतन्याय नमः ॥ मूलं धीमदं कज्जटं चेतन्याय नमः ॥ दद्यादहं प्रजम्भया स
कं मधुयकं स्वध ॥ मूलं धीमदं कज्जटं चेतन्याय नमः ॥ मूलं धीमदं कज्जटं चेतन्याय नमः ॥ दद्यादहं प्रजम्भया स
मूलं धीमदं कज्जटं चेतन्याय नमः ॥ मूलं धीमदं कज्जटं चेतन्याय नमः ॥ मूलं धीमदं कज्जटं चेतन्याय नमः ॥ दद्यादहं प्रजम्भया स
विद्याजलि ३ ॥ नमः ॥ मूलं धीमदं कज्जटं चेतन्याय नमः ॥ मूलं धीमदं कज्जटं चेतन्याय नमः ॥ दद्यादहं प्रजम्भया स
पनिवानमं यं न ॥ मूलं धीमदं कज्जटं चेतन्याय नमः ॥ मूलं धीमदं कज्जटं चेतन्याय नमः ॥ दद्यादहं प्रजम्भया स
साहा ॥ मूलं धीमदं कज्जटं चेतन्याय नमः ॥ मूलं धीमदं कज्जटं चेतन्याय नमः ॥ दद्यादहं प्रजम्भया स
याय वोषट् ॥ मूलं धीमदं कज्जटं चेतन्याय नमः ॥ मूलं धीमदं कज्जटं चेतन्याय नमः ॥ दद्यादहं प्रजम्भया स

[illegible]

[illegible]



[illegible]

नीकुं ३ सर्वला कान हृदि निहितानु कुरु २ वलिं गृहानु प्रसीद मरुं रुद्रं रुद्रं रुद्रं
 रुद्रं रुद्रं रुद्रं नमः ४ रुद्रं रुद्रं रुद्रं ॥ **श्रीवाहनोदियादि मन्त्रः** ॥ **॥ गियन प्रजा ॥ यथा**
म ॥ न्यास ॥ शो ४ रुद्राय रुद्रं ४ ॥ कुरु साधनं ॥ विंशं गुह्यं त्वां नमः ॥ क्रीं नृजनी त्वां नमः ॥
 शो ४ मधुमा त्वां नमः ॥ विंशं नमिका त्वां नमः ॥ क्रीं कनिष्ठा त्वां नमः ॥ सो केन तस्य रुद्रा त्वां
 नमः ॥ नुं हृदयाय नमः ॥ क्रीं निरस स्वाहा ॥ सो ४ निखाय वषट् ॥ विं कवचाय रुद्रं ॥ क्रीं नृगः
 जयाय वषट् ॥ शो ४ रुद्राय रुद्रं ॥ **॥ यथा ॥** यन्मासनाय नमः ॥ यज्ञाय तासनाय नमः ॥
॥ यान ॥ वालार्क मधुला लोसा च उवाह गिलाचना ॥ याम कृष्ण मना चर्य धानयनीं निर्वीर
 ऊ ॥ मूलन ॥ गिया ऊलि ३ ॥ नर्य ध ॥ मूलन पाद्यादि ॥ चन्दनादि ॥ मूलन ॥ गिया ऊलि ३ ॥
 नर्य ध ॥ चकदका र्कं गिया ऊलि ३ ॥ मूलन रुद्रा ॥ श्रीवाहनोदियादि ॥ वलि ॥ वाव इकनाथ
 य वलि गृह २ स्वाहा ॥ यो धा निनीत्या वलि गृह २ ॥ दां कुरु चालाय वलि गृह २ स्वाहा ॥ ११

ॐ गणेशाय नमः वलिंगं २ स्वाहा ॥ ॐ श्रीं सर्वविघ्नहर्त्रे सर्वलोकेश्वर वलिंगं २ स्वाहा ॥
 वाहनादि ॥ ध्यानि मन्त्रः ॥ ॥ मूलमनुष्यः ॥ शिवाय नमः ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 दिग्गजः ॥ ७ ॥ ॥ कर्माविद्वज्जगत्प्राधान्यं नमो कर्मादिभ्यः ॥ महामयूनासनाय वादकी ॥
 न ॥ कौर्मन्त्रीपत्रमादवी नीललोहितनजसा जटोद्गन्धनादवी लून्यार्जवसेविना ॥
 विमलसुवदनादव्या ४ र्धचन्द्रनिगनना सोम्यकुक्षुर्लदव्याददि ॥ धवयुतविना ॥
 मध्वक्षीर्णगिगावगी समन्त्रेनयवाधना दहि ॥ धवचगदादव्या वानमादाय सहेमा ॥ वामा
 चपमिगाजं द्यादहि ॥ धवचानूनापिथा मयूत्रवाहनादवी सर्वलोकेश्वर कर्मादिपत्री ॥
 शिवाय नमः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 त्वा वलि ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

[illegible]

नृक का मर्थवाद नृक मल चरव नान नम ॥ म मूख (नृव घण्टा दधन नृव धुधन क ॥ च
दो पा ज दो ला रणा म का ना चर ॥ ८ ध्वन ॥ ट क पा लि रु धा चान्य का नृव नृव ज म नृव ॥ ८ ॥
क (धुधनी का नृव नृव हा रु वि न रु धा ॥ दधु ना धन नृव नृव ना ग क धुधन च धुवान ॥ रु र्का
ना वी न सिं ह नृव ॥ कूटा का म च ला रु न ॥ य म ना ना नृव नृव ल र्का वा व ल रु धा ॥ ८ ॥
उ धुधन ज ला रु ॥ रु ना ला रु रु क रु धा ॥ रु धा नृव क रु धन च म रु धा पा ला उ दा रु ना ॥ य वा
म रु धन म रु धा न रु धा ॥ रु धा न रु धा ॥ रु धा न रु धा ॥ रु धा न रु धा ॥ रु धा न रु धा ॥ रु धा न रु धा ॥
रिं (ग व रुं का नृव ॥ म म न च रु धा व रु धा ॥ म रु धा म रु धा न रु धा ॥ म रु धा म रु धा न रु धा ॥
व रुं व रुं वा ध वि रु धा व रु धा व रु धा ॥ रु धा न रु धा ॥ रु धा न रु धा ॥ रु धा न रु धा ॥ रु धा न रु धा ॥
म रु धा न रु धा ॥ रु धा न रु धा ॥ रु धा न रु धा ॥ रु धा न रु धा ॥ रु धा न रु धा ॥ रु धा न रु धा ॥ रु धा न रु धा ॥
रु धा न रु धा ॥ रु धा न रु धा ॥ रु धा न रु धा ॥ रु धा न रु धा ॥ रु धा न रु धा ॥ रु धा न रु धा ॥ रु धा न रु धा ॥

४ म वि र्म हा वी र्या ४ पा ल यि त्वा स्ति ता ज ग त । न ग दै उ स दा का ल व लि द र्जा नि व द य ३
॥ च त्वा न रु ग र पा ल वि जा या ग द र व लि । त्ख ग न नू य की च स्वा वा नी व लि का दि ण ४ ॥
नि त्या धि का न च त्वा न ४ क या दा ०० न न ज न । व र्च ना ४ वि ष के ण च वि म र्श सो च न ४ द द्वा क
ना ला नू य ४ क या ला ह न ॥ ६ ॥ के सा ४ का मी न च न्द नी ख ॥ ७ ॥ म लि मी न रु नु धे वा प र्श
व र्क रु थ च ७ द्वा धे मु रु नु त १ ॥ ल वि ना न म लि ना थ च क म द्वा प ना य ॥ ८ ॥ घ ष्म वा चे च
गी ना थ न र्थि का म दा स दा ॥ ९ ॥ जं जं जी कूं नू म का य मू व न न २ दै उ पा ल क यि ल ज ट ल न
ल ॥ १० ॥ रि न ग द्वा ला म र्ख गं ध प र्श व लि द र्जा ग द र २ ह न व त्र य द ॥ ११ ॥ नू २ म न २ ख २
जं ह २ ह ४ म हा ग म ना धि य नं थ स्वा हा ॥ ॥ जं जं ज या च वि ज च व ज च नी वा य ना जि
गा । न द्वा ल द ज र्ज ली म क ला व वा ष क रु थ ॥ दि वा या ग्नि म हा या ग्नि सि धि या ग्नि ॥ १२ ॥
४ व नी । सा कि नी का ल ना र्जी व उ र्ज क णी नि म्म च नी । ग म्ही ना धा च धी रु सा प व ना मी ३

सा मिका। हीमधवमहा नन्दा कालामखी नथेवव॥ यि मवीह सिनीचे वयदधी धर्यटीन
धा॥ विषरुदी सर्वसिद्धि सुखि०० नथेववाकुं कानी राश्वनी दीर्घा प्रसादी कलह
प्रिया। मान झी काकद्विच नथा प्रिय नचा नकी॥ नादगी धातनादाचने का झी विष्णु
वृषिधी॥ लयं कनी प्रोडवीरं सी उक्ता झी न नहा जनी॥ विनरुड महाकासि विरुगाः
नना वझी वव धूवी नोडी च चिक्का ०० ध्वनी नथा॥ वाताहिना ने सिंही व निवदुति व
उ०० धिक्का॥ ०० दं दव्यामहायाग्नि वलिं ग द्रुमु मे सदा॥ जीव वषी याग्नित्या वलिं ग
द्रु२ सर्वगमनिके नरु सर्वविधि विना सय सर्वगमयगमनिके नरु रुद्रवाहा॥
जे०० जो सर्वपी (भ) पेयी (भ) निघा नाय द्वा ने मे वच। द्वा नाय द्वा ने मे वच। द्वा नाय द्वा ने मे वच। द्वा नाय द्वा ने मे वच।
ग स हि ना ॥ यागिनी यागवी ने दा ॥ सर्व ने गुल मागना ॥ ०० दीपर्व महाचक्रं श्री नाथ
वनदा मम॥ य ए क्का सा स न दं वी गुन पादा च न नना ॥ सर्वसिद्धि प्रसादां मदवि

तर्थाह धत्सदा॥ श्रीगार्ध्यागिनीनाम्नैयद्विषनिमहीनप्र । तदगणवसिंदवि समया
चात्रमनेके॥ प्रतिस्मनिमनः० पृष्टि मां समदाहिजीविनी । निकर्तयन्तु इक्ष्वा नां योगिनी
गधसं कला॥ कुरु कानिकसप्राणि इन्निमिह नदलापितान । निकर्तयन्तु इक्ष्वा नां
योगिनीगधसं कला॥ कुरु कानादि प्रयेयी भ मुयः० साना० प्र कोलिता । उषधी भूतु सं
दाहा दिग्म सु विदिग्म सच॥ महीपातालवज्रा ॥ सर्वस्माना कन वृव । योगिन्यायाग
शकोत्सा समथगिनु साधका॥ वीनकर्म हवे नेनु० सत्यगिनु दवगा॥ सिद्धाय
पुण्काचार्या० साधका० किनिग्म यिन॥ नगत्र कथगुम मेवाः स्रुटव्याप्ता स निद्धन । वापि
कुर्ये कवदवाः ॥ न साह मधुस ॥ नाना नृपय नान्य विव टजा विविध निवा । नेवः
सर्वपि सुदुष्ठा वलिगुदु सर्वतः॥ सत्रध गताय हं तर्था सर्वभन लु लुपद । प्रात्र
थ तन्मया कर्म र्क निष्ठा मियरुनी॥ वलिपूष्य पुदाने न सुदुष्ठा समविनका॥

। नानादम निवा सिन्ध्या त्रसि तव कस माग ना ॥ समया कृ नय वा न्या तथ च व सि की
दि धी ॥ ह्य न क स स वे दि वी र्ज न्य प र्या दि रु नु षो ॥ ए का द द नु मे का मा न वा क्ति नाः
र्थ द द स्व मे ॥ हुं हुं स्वा हा ॥ ॥ हुं हुं हुं हुं नि वा र ग व ति चै व मा या र द्रा न रे
व च । किं कि नी वि म ला जी व य म जि का ले द क षि धी ॥ घ ॥ दं नि वा न मा ना कि
कि नी का कि नी नु थ ॥ सि धि ल श्री मु या द र्श व लि ग द्वा नु मे स द ॥ स च वि धिः
या द मे ला प क पी सि धि ल श्री ला व लि ग द्वा नु मे स द ॥ स च वि धिः
१ काम नृ प पू ल वि पू ल ग ने जा ल पी ॥ ज या र्थ प द्वा ॥ १ म ध्व पी ॥ १ रि प थ
ग नि य ना द वि ग र्म न का र ॥ आ वा र्थ १ सि धि स चै रु द नू क लि य ग ष ष थ
नि नि व रु द्वा र्थ का र्थ प र्थ का र्थ उ न ल क स ह र्थ दि व द वि न मा मि ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥

याहू दिव्या कति दै दम दिनि उ व न स क पा ना ल मूल दशा पी (भय पी) (१) मिष
म व उष्य (१) म नू के वा म म न । सि (ध) गी ने क व दै उ द वि उ ल त ट व मु काना
व गा ने का ल र्या धू गि र्या मथ च म न व न उ वि या न य धान ॥ जा ला खे था ग
मू ख क ल य ति न ग ल का म नू य ~~स~~ नू य उ ऊ रू र्या न द हा स य दू प ट ह न
वी ला उ द (म) प द (म) ~~जी~~ ले या वि जा य न य उ य नि नि ल य ह म वि न्ध च ल
न जी म का वा उ द म म नू न य प गि नो न कि धी म कि नी ना । का मी न वा नु द (म) :
द वि उ म ल य के व म वा ह क रू ने मी ना य ह क रू न क उ न सि वि नू ज क सि दि
दू उ उ न ने । ए नू र्या या नि जा ने हि म गि नि नि रू ने की चि द (म) प्रि र्य (म) ला न रू
म ध द (म) ए उ पु न न ग न का मु क वा ॥ क धू ट कां क (म) वा म न ध पु न व न क धू
क रू क सि र्ण व धा म ह ह वा ह हि म न ज व ट ल पा ट ल ज न ना यो रू उ ह

माह चक्र मनिगधनितयजो हस्तवन्दन ता (मो) नदस्य नाख्य नि निगहि नु
हवा कह सि ह नाद ॥ वंम खलीम नाद निव प्रन नगन तड म ल जयाख्य श्रीवि
य्यो क क उ प्रवन नि नि न ट ये क क ह व ल का वा नाध स्या विम स रि पथ म
नि प (थ) उ ड क ल व मा (मो) सु काने म क मा ल म ल य नि नि उ हा व म द (म
प्र न वा ॥ रुडी (म) म ल ध न पु के नि प्र न ल य सि ह क र्ण म म के रि (म) उ व्या म
मथ्य सु न व न ग य न ग क नाख्य सु न प्र म गि ना म उ जा क वि वि ध व ध न गी मा
न न स्तो सु स वा तु का ४ सि डा ४ सु सि डा वि वि ध व ध न ना दिव्य सि डि द द नु ॥ ख
म चाम नु सि डि प्र न व न वि स द ख ग नि ना व न म्वा न क र्ण म वि प्र ल व लि प
लि न ज य सु र्ण स च वि या दि क य र्ण क वि र्ण नि वि न स उ रि का पा द का काम
सि डि सु च (म) नो द द नु म लि यी नि न न ना र न व ध न न का ॥ द व ल य न

नि मा नि ग्रह गंधन गले विरूपा नेत्र लवा नाज दान जलो ध विद्य टय उह र्य आयु र्ग न्यः
ॐ मूष्ण ॥ ओं हूं कोत्र यनी ह ह ह ह ह सि ने च च यनी पिव नी मनु मा ना कि लि कि लि
न कि लि ४ सो ल हा धी गि न नी ॥ सा उष्मा काम रूपा यत्र ल व प ट हा हा ह हूं क ने ना दा उ
हि ष्ठा नी ल के ष्म न्र म न स ह द या वि नु मू षि प ग म्ता ॥ हूं हूं हूं कोत्र यनी नृ नृ धि नः
व ग्म खा य मा ना स ना धा जि का र्ग ला ल य नी ल ल ल ल ल ल ना डा व य नी पिव नी क ष्म
का मा ख्य दू नी न्र म ल गु ध नृ ना वि नु ना दा न ली न न्र म्ता नृ नृ धि नः
दि ना न ४ म म्ता ॥ पा ठ हूं ला क या ला ठा स प म न य ना पा र्थि व ना नृ य का ष ष्म वि नु य
का क ल क म नृ ना ना नि धी के धु ला ख्या ॥ वि ख्या ना नृ ड म कि ४ स च दि स उ नि व ही ष धी
उ का ली कां कौ कूं काम रू या न्य क ल क ल ग ना द्वे वि धा र ह द य नी ॥ सा म ग्री क षि क
स्या वि ने नृ उ प न म वाम दि व्य ध मा र्च वा मू ष्ण कोत्र म र्म क ल क म ल म य को नि नी

का कं धाखा आखा ना वाम मा (र्ग) प कटि न नि लया मा लि नी विन्दु दहा ॥ ॐ का ने म धु ल
वान् कल कल मया या नि व के प वि श्र धी ना (धो) र्ग ग ना प व ने म नि ग (ध) च चि नाः
ली म सु हि ४ सा दे वी ना क मा ना नि व स क ल म र्ग ना पा दु धी ना थ च के ॥ धी क ध्म त्र्य
माना व उ र्ग ग ह नि ना म ध लि (ग) मि का खा पी १ र्ग धू त य नी च क व कि न क ला
को ल मा (ने) दि ना ला ना म्ना धी कू डि का खा लि प थ ग मि य ना लि द ना रि य का नाः
ना दे वी ना मि र्ग प कटि न नि लया प श्र का क रि ना ॥ को ली कं का ल रू पा क लि
न न न न वा ली य धी ल द य नी सा म धी कू डि का मा यु क ट य उ मा हा र्ग न दि धो
च मा धी ॥ जी र्ग जी र्ग जी र्ग जी र्ग जी र्ग जी र्ग जी र्ग जी र्ग ॥ म दि द हि सि डि द हि
राने द हि आ य द हि ध न द हि ध न द हि ध न द हि ल जी द हि र्ग मी व लि ग र्ग र्ग म म नाः
च धे खा ला ॥ स म ल न कू पी ० ॥ उ का नू कं ॥ द म ख व न दा म न खा ला ॥ ॥ ॥ ॥

यजमान विष्णुसिंहायक ॥ कतिरुज ॥ निर्वाणाय ॥ ॥ वाकमहावलिमधुनके ॥
विंजदां दुग् पाताय वलिं गुरु रत्नाहा ॥ श्री जी कल पुर वट्टे कनाथ य वलिं गुरु र
त्नाहा ॥ गं गी गृ ग ४ (गं) ४ कल ग (गं) वना य वलिं गुरु रत्नाहा ॥ क म हा क न वी न
गं गी यि प न य वलिं गुरु रत्नाहा ॥ कूं श्री सिद्धि वाम् ६ ध्वनी वलिं गुरु रत्नाहा ॥
आकाश वानिधी सवर्ण त्या वलिं गुरु रत्नाहा ॥ सर्व त्या द न त्या ४ सर्व त्या ४ विष्णु
व त्या ४ सर्व त्या ४ द व ना त्या वलिं गुरु रत्नाहा ॥ समस्त मनुषी ० सिंहासन यी
० यी ॥ भयपी ० द गोय दं ग स दा हा प स दा ह दिव्य समय च क पाइ कां ॥ ३ ॥
का नू कां य कि वि नू सर्व ३ द द या य पा इ कां वलिं गुरु रत्नाहा ॥ पन्थि म श्रु दः
नू श्रु म हा म या श्री कृ षि का द वी पी सिद्धि ल मी म द क ऊ द गु श्रु का लि सिं
नू सुन्दरी देवी मू लि त्या य ५ ३ द ग वलिं गुरु रत्नाहा ॥ द म स्व व न दा म म स्वाहा ॥ च

तुनादिपूष्यवर्तिनने॥ **श्रीवाहनादि॥ यानिमू॥** ॥ **पूष्यमहा** निरुच्य दीप
नेवाय॥ ॥ **जाप॥** प्रो स्वाहा१०॥ श्रीं स्वाहा१०॥ गुरुं स्वाहा१०॥ श्रीं स्वाहा१०॥ श्रीं
स्वाहा॥१०॥ जां जां कुं स्वाहा१०॥ जां कुं स्वाहा१०॥ एं जां कुं जां कुं श्रीं दां को न श्रीम
४१०॥ एं हुं सिद्धिकलात्रीं जां कुं श्रीं हुं नमः४ स्वाहा१०॥ श्रीं स्वाहा१०॥ श्रीं श्रीं
श्रीं स्वाहा१०॥ श्रीं स्वाहा१०॥ जय समर्थे॥ ॥ **जय श्री** दिगम्बरेश्वर ॥ **गोकिलं** गुरुं श्रीं
नामिनुकन ॥ **जय** नु॥ सिद्धिं वरुमनिद हित्व न्यता श्रीं दात्त विस्मिन् ॥
ॐ द जयं ब्रह्मा स्वहा॥ **जय** स्वानविय॥ **मधुन** दय कुं ॥ **श्री** न नि॥ रुद्र
मना सलं खन होय॥ **गय** रिध न च पाय ध होय॥ **सम** हें व क सें कुं सि॥ **य** न
द विन वा सि के॥ **श्री** ना रि क निद दीपं ब्रह्म न मेम सिद्धय॥ ॥ **श्री** न॥ **ज** न्म ख
६३ म धु ला को न॥ श्रीं महा ह न वा य॥ श्रीं द व वा च॥ श्रीं स च ला ह ॥ **ग** कि स ॥

सुक्ताने सुग ॥ माहा मया ॥ विष्णुना दी ॥ न काचन ॥ ह नार्था ॥ ॐ कृष्ण नि ॥ उका ना ॥ व न्ना
धी ॥ मध्य रिता ॥ अमा नका ॥ मार्क (धु)या ॥ प क ट वि क ट ॥ उ रु ला ॥ या सा न क कानि
॥ विं दु से व ॥ माया कृष्ण ॥ वा न हा व ॥ पृष्ण स्व त्री नि गी ना थ द (ज) ध्वनी कृष्ण ध्वनी ॥
गि यू ना हा ट के णी च ष ज म्ना य न मा सु ने ॥ **मृग गन्धादि ॥ न म स्ता न या य न न र्पथ**
॥ ए को न क ॥ म धु ल हा य ॥ नृ श्व द र्वा ॥ स्नान न कु य ॥ **॥ वृथ द जा ॥ रु द च य रं**
ख न स र ॥ न न सि ध न ध का न ॥ स्नान न कु च के ॥ **न्या स ॥ वृं नृ माय रु द ॥ के न सा ध**
न ॥ वृं ह द या य न म ॥ वृं नि न स स्वा हा ॥ वृं नि खा ये वे ष ट ॥ वृं क व चा ये द ॥ वृं नृ ग
उ या य वि ष ट ॥ वृं नृ माय रु द ॥ **क नो र्ग न्या से ॥** ॥ **ॐ जी क र्ति को य जी रु द ॥ ३ ॥ व**
म द जा ॥ ख न ॥ य ख ल ना सा ये ग कि कार्या ये न त्य न ॥ प उ वृ थ ल या भा वृ ख न न
अ ये न न म ॥ ॐ का लि रे व ज ध्वनी ला ह व धु अ य न म **मृग गन्धादि ॥ ॥ ॐ उ व**

यके॥ उा इ स न वं च न पाय॥ ऊ४ न्म माय रुद्र ३॥ वलि॥ ॐ ह न्नाय विविध काम
 ला रुवि दिव्या त नि द्वा॥ पा ना ल त ल वा सि न्य ४ स हि ना सु नो नि रुय ॥ ६
 ०० दे व तिं ग रु २ स्वा हा॥ म ना वि षा व व लि वा य॥ उा उ स र व न हा य॥ च न सि ध
 न धे ते च के॥ स्वा न न च च के॥ स्वा य न्न ते च के॥ न्या स॥ ऊ४ न्म माय रुद्र ४॥ जा
 क नि षा ल्या न म॥ ०० द्या दि न्या स॥ द उ न॥ नि न सि॥ ॐ ४॥ द्या नी न क ला ये न
 म॥ इ र्ग रि स॥ ॐ ४॥ नि क ला य र॥ कु ष्ठ थ स॥ ॐ वि द्या क ला ये र॥ ना रि स॥
 पु नि षो क ला य र॥ कि र्श स॥ ॐ जा न मे षा नि न सि॥ ॐ जा न मे षा इ र्ग रि स ४॥
 ॐ कुं न मे षा कु ष्ठ थि स॥ लो म वि लो म न॥ रुं प्रा द्द ४॥ ॐ रुं जां प न म पा न
 क नो सा य र प उ भा दं क र र स्वा हा॥ का ग स्य पू ष्ठ पृ ष्ठ नि न सि॥ ॥ वि षा स र
 ॥ ॐ रुं च यो ष ध वि न्द्रु र्च ३॥ प उ मा य री का ग स्य क र्श ३॥ ॐ प उ

[illegible]

हा रुट ॥ ॥ ॐ जौं श्रीं श्रीं म द क ऊ ट ॐ मीं न क व लीं ग रुट २ म म स र्वा य च्छां
 नि कू र २ प न वि र्थां ॐ ग २ श्री म द क ऊ ट सा य नि वा ना य न क व र्तिं ग रुट २
 स्वा हा ॥ ॥ ॐ जौं ॥ ॐ कौं ॐ ॐ ॐ न क र्तिं ग हा ध ॐ ॐ रुट स्वा हा ॥ ॥
 गि न क व र्ति ॥ ७ ॥ ॥ ॐ क व र्ति ॥ ७ ॥ ॐ क व र्ति ॥ ७ ॥ ॐ क व र्ति ॥ ७ ॥
 पा इ कां ॥ कू म्मा स्नाय पा इ कां ॥ व्यास ॥ ॐ हि त्रि २ म्माय रुट ॥ क न सा ध न
 ॥ ॐ मा नं (ग ष्व नाय क नि वृ काय न म ॥ ॐ मा नं (ग ष्व नाय त्र ना मि क र यः
 न म ॥ ॐ मा नं (ग ष्व नाय म ध्वा माय न म ॥ ॐ मा नं (ग ष्व नाय त र्जु न्याय न
 म ॥ ॐ मा नं (ग ष्व नाय म्मं गु ष्ठाय न म ॥ हि त्रि २ म्माय रुट ॥ ॐ ग न्याय ॥ ॐ
 मा नं (ग ष्व नाय द द याय न म ॥ ॐ मा नं (ग ष्व नाय नि न र्थ स्वा हा ॥ ॐ मा
 नं (ग ष्व नाय नि स्वाय वी ष ट् ॥ ॐ मा नं (ग ष्व नाय क व चाय ॐ स्वा हा ॥ ॥

[illegible]

इकां॥ जउ द्विष्टमा नं गेध्वनी देवी पाइकां॥ ~~गुणिष्टरूपयष्टजा॥~~ ॥ उनेत्या नम
॥ नाइसत्या नम॥ ॥ ~~उमिष्टजा~~ निवाय २॥ ~~गुणा~~ नाय २॥ गृद्धाय २॥ उत्तराय
२॥ ॥ ~~कान~~ ॥ गुं हूं पूं मुं तूं पनाग कुर्य २॥ उं जी स ४ त्याय मथ नय नाग कि
हुं वलिं गृद्ध २ स्वाहा॥ ~~विनायक~~ ॥ उं जं मुं फूं र सिद्धि मा गं गेध्वनीय मां
हुं फूं सिद्धि मा गं गेध्वनी देवी पाइकां॥ ॥ ~~गुं~~ दूदयादि न सं दू दू॥ पनका इ
छाय धवन काय॥ वलि॥ अहि निर उच्छिष्ट मखे त्या वलिं गृद्ध २ स्वाहा॥ मह
वलि न धून के॥ ~~नावा दना दित~~ ॥ ~~धन दीप~~ ॥ हुं स्वाहा १४॥ ~~का~~ ॥
ह मा हं दीफ न उं गलि न र विजे प जी दि न उं क ला ल ह ह ख र्ड उ के हि ने द
प न ४ ग ४ मी हू गृहं क पा लं । च का के म स मा सा स व न स वि वि मि मा ना ध न
सं ह्मा मा न अं श्री स हं व स्त ग धा य नि व ना नो मि उ द्विष्ट नाथ॥ नमस्तु पन

मंदव सिद्धि मार्ग न ष्ठी ष्व नी ॥ सर्व चक्रा व स धन मान न्द मूदि तो लया ॥
सर्व शक्ति क्रिया सिद्धि वाक्कि गार्थ रु स प दा ॥ सर्व स प हि दाल श्री स प दा
य ज मा य व ॥ ~~नृप न मादि न न कान ॥ न य प पा य ॥ कान क ॥~~
~~॥ अ य कू ट का या व ना चा ला नी वा य स्व या न ॥ कल क च्छा य ॥ व य य ॥~~
~~कल का रि ह क ॥ उ कार न त्या दि ॥ ग म ल द या न ॥ ॐ न कल स्व दू जा ॥~~
~~स च ग ट ले ट आ धि न उ दि ॥ दे व रु द रु द रु द या का य दे व रु द रु द या का य~~
~~सि ह न स्त्री च या ही श्व नी वा मा चा र्थ पी रु न ज य ना य न क मा वा क~~
~~सा वा या वि या रु ना रु क धा का रु मा ल रु या रु मि न वि या रु ना ॥ अ य ॥~~





















ASHA AP. HVES

श्री ११०

११०

ASHA AP. HVES



